http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

*कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका,* (2026) वर्ष 6, अंक 7, 85-90

Article ID:633

# महिला उद्यमियों की कृषि नवाचार में बढ़ती भूमिका

**डॉ. आशुतोष कुमार**[1*], **डॉ. रतुल मोनी राम**[2]

[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ, उद्यान, कृषि विज्ञान केंद्र नरकटियागंज, डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर बिहार

[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ, पौधा संरक्षण, कृषि विज्ञान केंद्र नरकटियागंज, डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर बिहार

*अनुरूपी लेखक

**डॉ. आशुतोष कुमार***

भारतीय कृषि में महिलाओं की भूमिका परंपरागत श्रमिक से आगे बढ़कर आज सफल कृषि उद्यमी एवं नवाचारकर्ता के रूप में स्थापित हो रही है। आधुनिक कृषि तकनीकों, डिजिटल कृषि, जैविक एवं प्राकृतिक खेती, मूल्य संवर्धन, खाद्य प्रसंस्करण, कृषि स्टार्टअप तथा ई-विपणन के माध्यम से महिला उद्यमी कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला रही हैं। वे कृषि उत्पादकता बढ़ाने, संसाधनों के सतत उपयोग, ग्रामीण रोजगार सृजन, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। यद्यपि पूंजी की कमी, तकनीकी ज्ञान का अभाव, विपणन संबंधी कठिनाइयाँ तथा सामाजिक बाधाएँ अभी भी उनके समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ हैं, फिर भी विभिन्न सरकारी योजनाएँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा डिजिटल तकनीकों का विस्तार उनके लिए नए अवसर प्रदान कर रहे हैं। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ड्रोन, जलवायु-स्मार्ट कृषि तथा कृषि स्टार्टअप के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी भारतीय कृषि को अधिक टिकाऊ, नवाचारी एवं आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। अतः महिला उद्यमिता का सशक्तिकरण कृषि विकास और समावेशी आर्थिक प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है।

## भूमिका

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ लगभग आधी आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। भारतीय कृषि में महिलाओं का योगदान सदियों से महत्वपूर्ण रहा है। खेत की तैयारी, बुवाई, निराई-गुड़ाई, सिंचाई, कटाई, पशुपालन, डेयरी, मत्स्य पालन, बागवानी तथा कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण तक महिलाएँ सक्रिय भूमिका निभाती रही हैं। परंपरागत रूप से महिलाओं को केवल श्रमिक के रूप में देखा जाता था, किन्तु वर्तमान समय में वे कृषि उद्यमी के रूप में उभर रही हैं।

नई कृषि तकनीकों, डिजिटल कृषि, जैविक खेती, मूल्य संवर्धन ,ई-कॉमर्स, स्टार्टअप संस्कृति तथा सरकारी योजनाओं के विस्तार ने महिलाओं के लिए कृषि क्षेत्र में नए अवसर उत्पन्न किए हैं। आज महिलाएँ आधुनिक कृषि उपकरणों का उपयोग कर रही हैं, कृषि उत्पादों का ब्रांड विकसित कर रही हैं तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान कर रही हैं। महिला उद्यमियों की यह बढ़ती भूमिका न केवल कृषि नवाचार को गति दे रही है, बल्कि ग्रामीण विकास, रोजगार सृजन और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

## कृषि नवाचार का अर्थ

कृषि नवाचार से आशय कृषि उत्पादन, प्रसंस्करण, विपणन तथा प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में नई तकनीकों, वैज्ञानिक विधियों, उत्पादों, सेवाओं एवं प्रबंधन प्रणालियों के विकास तथा उनके प्रभावी उपयोग से है। इसका मुख्य उद्देश्य कृषि की उत्पादकता, गुणवत्ता, लाभप्रदता तथा स्थिरता को बढ़ाना है। वर्तमान समय में कृषि नवाचार केवल नई मशीनों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें उन्नत

बीज एवं जैव प्रौद्योगिकी, सटीक कृषि, ड्रोन एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), स्मार्ट सिंचाई प्रणाली, जैविक एवं प्राकृतिक खेती, मूल्य संवर्धन एवं खाद्य प्रसंस्करण, डिजिटल विपणन, ई-कॉमर्स, कृषि यंत्रीकरण, जल संरक्षण तकनीक तथा जलवायु-स्मार्ट कृषि जैसी आधुनिक अवधारणाएँ भी शामिल हैं। कृषि नवाचार किसानों की आय बढ़ाने, उत्पादन लागत कम करने, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा बदलती जलवायु परिस्थितियों के अनुरूप टिकाऊ एवं प्रतिस्पर्धी कृषि प्रणाली विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## महिला उद्यमिता का अर्थ

महिला उद्यमिता वह प्रक्रिया है जिसमें महिलाएँ स्वयं का व्यवसाय स्थापित करती हैं, उसका प्रभावी प्रबंधन करती हैं, जोखिम उठाती हैं तथा नवीन विचारों, तकनीकों और संसाधनों का उपयोग करके आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान देती हैं। कृषि क्षेत्र में महिला उद्यमिता का दायरा निरंतर बढ़ रहा है, जिसमें जैविक खेती, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, डेयरी एवं पशुपालन, पोल्ट्री पालन, मत्स्य पालन, बागवानी, खाद्य प्रसंस्करण, कृषि पर्यटन, बीज उत्पादन, फूलों की खेती तथा नर्सरी व्यवसाय जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं। महिला उद्यमिता ग्रामीण रोजगार, आय वृद्धि, कृषि नवाचार, महिला सशक्तिकरण तथा सतत कृषि विकास को बढ़ावा देने का एक प्रभावी माध्यम है।

## कृषि नवाचार में महिलाओं की बढ़ती भूमिका

### 1. जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा

कृषि नवाचार के क्षेत्र में महिला उद्यमी जैविक एवं प्राकृतिक खेती को व्यापक रूप से अपनाकर टिकाऊ कृषि विकास को प्रोत्साहित कर रही हैं। वे रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के स्थान पर जैविक खाद, वर्मी कम्पोस्ट, गोबर खाद, जीवामृत, बीजामृत तथा प्राकृतिक कीट नियंत्रण तकनीकों का उपयोग कर सुरक्षित एवं स्वास्थ्यवर्धक खाद्य उत्पादन सुनिश्चित कर रही हैं। इससे मृदा की उर्वरता और जैविक गतिविधियाँ बढ़ती हैं, उत्पादन लागत कम होती है तथा पर्यावरण प्रदूषण में कमी आती है। इसके साथ ही जैव विविधता का संरक्षण होता है और उच्च गुणवत्ता वाले, रसायन-मुक्त कृषि उत्पाद प्राप्त होते हैं, जिनकी बाजार में मांग और मूल्य दोनों अधिक होते हैं।

### 2. मूल्य संवर्धन

महिला उद्यमी कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण (Processing) एवं पैकेजिंग कर उनके मूल्य में वृद्धि कर रही हैं, जिससे किसानों और स्वयं उद्यमियों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। वे अचार, पापड़, जैम, जेली, टमाटर सॉस, फल स्क्वैश, मसाले, बाजरा आधारित उत्पाद, मिलेट कुकीज़ तथा विभिन्न प्रकार के आटा मिश्रण जैसे उत्पाद तैयार कर स्थानीय एवं राष्ट्रीय बाजारों में विक्रय कर रही हैं। मूल्य संवर्धन से कृषि उत्पादों की गुणवत्ता, भंडारण अवधि एवं बाजार मूल्य बढ़ता है, खाद्य अपव्यय कम होता है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर सृजित होते हैं। यह महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं कृषि नवाचार को भी सशक्त बनाता है।

### 3. डिजिटल कृषि

डिजिटल कृषि के क्षेत्र में महिला उद्यमियों की भागीदारी निरंतर बढ़ रही है। वे मोबाइल ऐप, इंटरनेट तथा विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाते हुए अपने कृषि व्यवसाय को अधिक कुशल और लाभकारी बना रही हैं। महिलाएँ मौसम पूर्वानुमान, बाजार मूल्य, ऑनलाइन प्रशिक्षण, ई-कॉमर्स, डिजिटल भुगतान, सोशल मीडिया मार्केटिंग तथा ऑनलाइन ग्राहक सेवा जैसी सुविधाओं का प्रभावी उपयोग कर रही हैं। इन डिजिटल नवाचारों से समय पर सही जानकारी प्राप्त होती है, विपणन के नए अवसर मिलते हैं, बिचौलियों पर निर्भरता कम होती है तथा उत्पादों की बिक्री और आय में वृद्धि होती है। इससे महिला उद्यमिता और कृषि नवाचार दोनों को नई दिशा मिल रही है।

### 4. कृषि स्टार्टअप

वर्तमान समय में अनेक महिला उद्यमी कृषि स्टार्टअप स्थापित कर कृषि क्षेत्र में नवाचार और आधुनिक तकनीकों को बढ़ावा दे रही हैं। वे स्मार्ट सिंचाई प्रणाली, जैव उर्वरकों का उत्पादन, ड्रोन आधारित कृषि सेवाएँ, कृषि मशीनों की किराया सेवा, कृषि परामर्श, एग्री-टेक प्लेटफॉर्म, खाद्य प्रसंस्करण तथा कृषि उत्पादों की आपूर्ति श्रृंखला जैसे क्षेत्रों में सफल उद्यम विकसित कर रही हैं। इन स्टार्टअप्स के माध्यम से किसानों को आधुनिक तकनीक, गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ तथा बेहतर बाजार उपलब्ध हो रहे हैं। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर सृजित हो रहे हैं, कृषि की उत्पादकता और लाभप्रदता बढ़ रही है तथा महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता और नवाचार क्षमता को भी सुदृढ़ बल मिल रहा है।

### 5. किसान उत्पादक संगठन (FPO)

महिला उद्यमी स्वयं सहायता समूह तथा किसान उत्पादक संगठन के माध्यम से सामूहिक उद्यम स्थापित कर कृषि नवाचार को बढ़ावा दे रही हैं। इन संगठनों के माध्यम से महिलाएँ सामूहिक रूप से कृषि आदानों की खरीद, उत्पादों का प्रसंस्करण, भंडारण एवं विपणन करती हैं, जिससे उत्पादन लागत कम होती है और बेहतर मूल्य प्राप्त होता है। सामूहिक प्रयासों से उनकी सौदेबाजी क्षमता बढ़ती है, बाजार तक सीधी पहुँच बनती है तथा आय में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, FPO और SHG ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन, महिला सशक्तिकरण, नेतृत्व विकास तथा सतत एवं समावेशी कृषि विकास को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**6. जल संरक्षण एवं जलवायु-स्मार्ट कृषि**

महिला उद्यमी जल संरक्षण तकनीकों को अपनाकर जलवायु-स्मार्ट एवं टिकाऊ कृषि को बढ़ावा दे रही हैं। वे ड्रिप सिंचाई, स्प्रिंकलर प्रणाली, वर्षा जल संचयन, मल्चिंग, सूखा-सहनशील फसलों का चयन तथा मिश्रित खेती जैसी आधुनिक तकनीकों का प्रभावी उपयोग कर जल की बचत और संसाधनों का बेहतर प्रबंधन कर रही हैं। इन उपायों से सिंचाई जल की आवश्यकता कम होती है, मृदा में नमी बनी रहती है तथा जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों का सामना करने की क्षमता बढ़ती है। परिणामस्वरूप फसल उत्पादकता, संसाधन उपयोग दक्षता और किसानों की आय में वृद्धि होती है तथा पर्यावरण संरक्षण और सतत कृषि विकास को भी प्रोत्साहन मिलता है।

**7. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग**

महिला उद्यमी छोटे एवं मध्यम स्तर के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग स्थापित कर कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर रही हैं। वे अनाज प्रसंस्करण, फल एवं सब्जी प्रसंस्करण, डेयरी उत्पादों का निर्माण, मसाला उद्योग तथा मिलेट आधारित खाद्य उत्पादों के उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। खाद्य प्रसंस्करण के माध्यम से कृषि उत्पादों की गुणवत्ता, पोषण मूल्य एवं भंडारण अवधि में वृद्धि होती है, जिससे किसानों और उद्यमियों को अधिक लाभ प्राप्त होता है। यह उद्योग खाद्य अपव्यय को कम करने, ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन, महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा स्थानीय कृषि उत्पादों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

**8. पशुपालन एवं डेयरी उद्यमिता**

महिला उद्यमी डेयरी, बकरी पालन, मुर्गी पालन तथा मत्स्य पालन जैसे कृषि-आधारित उद्यमों के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बना रही हैं। ये गतिविधियाँ कम निवेश में नियमित आय का स्रोत प्रदान करती हैं तथा परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाती हैं। डेयरी एवं पशुपालन से दूध, अंडे, मांस और मछली जैसे पौष्टिक खाद्य पदार्थ उपलब्ध होने से पोषण सुरक्षा भी सुनिश्चित होती है। इसके अतिरिक्त, इन उद्यमों से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि होती है। इस प्रकार पशुपालन एवं डेयरी उद्यमिता ग्रामीण विकास तथा कृषि नवाचार का महत्वपूर्ण आधार बनती जा रही है।

**9. कृषि विपणन**

महिला उद्यमी आधुनिक कृषि विपणन तकनीकों को अपनाकर अपने उत्पाद सीधे उपभोक्ताओं तक पहुँचा रही हैं, जिससे उनकी आय और बाजार पहुँच में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। वे ऑनलाइन बिक्री, ब्रांड निर्माण, आकर्षक पैकेजिंग, डिजिटल भुगतान तथा सोशल मीडिया प्रचार जैसे नवाचारों का प्रभावी उपयोग कर अपने उत्पादों की पहचान स्थापित कर रही हैं। इससे बिचौलियों पर निर्भरता कम होती है, उचित मूल्य प्राप्त होता है तथा ग्राहकों का विश्वास बढ़ता है। डिजिटल विपणन के माध्यम से स्थानीय कृषि उत्पाद राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच रहे हैं। इस प्रकार आधुनिक कृषि विपणन महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण, उद्यमिता विकास तथा कृषि नवाचार को नई दिशा प्रदान कर रहा है।

**कृषि नवाचार में महिलाओं के प्रमुख योगदान**

कृषि नवाचार के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी है। महिला उद्यमियों ने आधुनिक कृषि तकनीकों, जैविक एवं प्राकृतिक खेती, मूल्य संवर्धन, खाद्य प्रसंस्करण तथा डिजिटल विपणन को अपनाकर कृषि उत्पादन और गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि की है। वे नई तकनीकों के प्रसार के माध्यम से किसानों को आधुनिक कृषि पद्धतियों से जोड़ रही हैं तथा टिकाऊ एवं जलवायु-स्मार्ट कृषि को बढ़ावा दे रही हैं। महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर सृजित हुए हैं, जिससे परिवारों की आय एवं पोषण सुरक्षा में सुधार हुआ है। साथ ही, खाद्य सुरक्षा को मजबूत करने, ग्रामीण उद्योगों के विकास, स्थानीय संसाधनों के वैज्ञानिक एवं प्रभावी उपयोग तथा पर्यावरण संरक्षण में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है। महिला उद्यमिता ने

महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है और आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह कृषि क्षेत्र के समावेशी, नवाचारी एवं सतत विकास का आधार बनती जा रही है।

## महिला कृषि उद्यमियों की सफलता के क्षेत्र

महिला कृषि उद्यमियों ने कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जैविक खेती के माध्यम से वे रसायन-मुक्त एवं उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उत्पाद तैयार कर बेहतर बाजार मूल्य प्राप्त कर रही हैं। मशरूम उत्पादन कम लागत, कम भूमि तथा कम समय में अधिक लाभ देने वाला सफल उद्यम बनकर उभरा है। मधुमक्खी पालन से शहद उत्पादन के साथ-साथ परागण में वृद्धि होती है, जिससे फसलों की उत्पादकता भी बढ़ती है। डेयरी उद्योग के अंतर्गत महिलाएँ दूध, पनीर, घी, दही तथा अन्य दुग्ध उत्पादों का उत्पादन एवं विपणन कर नियमित आय अर्जित कर रही हैं। फूलों की खेती में कट फ्लावर एवं सजावटी पौधों का उत्पादन लाभदायक व्यवसाय बन चुका है। इसके अतिरिक्त, तुलसी, अश्वगंधा, एलोवेरा, लेमनग्रास तथा अन्य औषधीय एवं सुगंधित पौधों की व्यावसायिक खेती से महिलाएँ आय के नए स्रोत विकसित कर कृषि उद्यमिता और ग्रामीण विकास को नई दिशा दे रही हैं।

## महिला उद्यमियों के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

यद्यपि कृषि क्षेत्र में महिला उद्यमियों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है, फिर भी उन्हें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पूंजी की कमी, बैंक ऋण प्राप्त करने में कठिनाई तथा सीमित निवेश अवसर उनके व्यवसाय के विकास में बाधा बनते हैं। सामाजिक स्तर पर लैंगिक भेदभाव, निर्णय लेने में सीमित भागीदारी और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी उनकी प्रगति को प्रभावित करती हैं। आधुनिक तकनीकों का सीमित ज्ञान, डिजिटल साक्षरता की कमी तथा प्रशिक्षण का अभाव तकनीकी चुनौतियाँ हैं। इसके अतिरिक्त, बाजार तक सीमित पहुँच, उचित मूल्य का अभाव, ब्रांड पहचान की कमी, भंडारण एवं परिवहन सुविधाओं की कमी भी महिला कृषि उद्यमियों के विकास में प्रमुख बाधाएँ हैं।

## महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली सरकारी योजनाएँ

महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM), दीनदयाल अंत्योदय योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्टैंड-अप इंडिया तथा प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP) महिलाओं को वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण एवं स्वरोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, किसान क्रेडिट कार्ड, महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना (MKSP), कृषि अवसंरचना निधि, राष्ट्रीय बागवानी मिशन तथा राष्ट्रीय मधुमक्खी एवं शहद मिशन जैसी योजनाएँ कृषि आधारित उद्यमों को बढ़ावा देती हैं। ये योजनाएँ महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाकर कृषि नवाचार, ग्रामीण विकास तथा रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

## महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के उपाय

महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराना, डिजिटल साक्षरता बढ़ाना तथा आसान एवं कम ब्याज पर ऋण की सुविधा प्रदान करना आवश्यक है। महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को सशक्त बनाकर सामूहिक उद्यमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। कृषि स्टार्टअप के लिए विशेष वित्तीय सहायता, मूल्य संवर्धन एवं खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना तथा विपणन और ब्रांडिंग में सहयोग प्रदान किया जाना चाहिए। साथ ही, अनुसंधान संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों से तकनीकी सहयोग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ड्रोन एवं IoT जैसी

आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण तथा ग्रामीण क्षेत्रों में भंडारण और प्रसंस्करण सुविधाओं का विस्तार महिला कृषि उद्यमिता के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

## कृषि नवाचार में महिलाओं की भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य में कृषि नवाचार के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण होने की संभावना है। डिजिटल कृषि के विस्तार, जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग तथा मिलेट एवं पोषण आधारित कृषि को बढ़ावा मिलने से महिला उद्यमियों के लिए नए अवसर उपलब्ध होंगे। कृषि स्टार्टअप, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ड्रोन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) तथा सटीक कृषि जैसी आधुनिक तकनीकों में महिलाओं की भागीदारी निरंतर बढ़ेगी। जलवायु परिवर्तन के अनुकूल कृषि तकनीकों को अपनाने में भी उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रहेगी। साथ ही, भारतीय कृषि उत्पादों की वैश्विक मांग बढ़ने से महिला उद्यमियों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपने उत्पादों के विपणन और व्यवसाय विस्तार के अधिक अवसर प्राप्त होंगे।

## निष्कर्ष

महिला उद्यमी आज भारतीय कृषि परिवर्तन की अग्रदूत बन चुकी हैं। वे केवल कृषि कार्यों में सहयोगी नहीं, बल्कि नवाचार, नेतृत्व, प्रबंधन और उद्यमिता की महत्वपूर्ण वाहक हैं। आधुनिक तकनीकों, डिजिटल प्लेटफॉर्म, जैविक खेती, खाद्य प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन तथा कृषि स्टार्टअप के माध्यम से महिलाएँ कृषि को अधिक लाभकारी, टिकाऊ और प्रतिस्पर्धी बना रही हैं। यदि उन्हें गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता, तकनीकी मार्गदर्शन, विपणन सुविधाएँ तथा नीति स्तर पर पर्याप्त समर्थन उपलब्ध कराया जाए, तो वे भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा सकती हैं। महिला उद्यमिता का सशक्तिकरण केवल लैंगिक समानता का विषय नहीं, बल्कि समावेशी, नवाचारी और आत्मनिर्भर कृषि विकास की आधारशिला है।